मनुष्य बनो

انسان بنو

मानवता के मुख्य नियम

वा०मू०
१-२५

...फकीर चन्दजी महाराज

...वता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५.२५ है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २७ | आषाढ़ सं० २०३४ वि० जून १९७७ | संख्या ९

उपदेश का अंग

देह धरे का गुन यही, देह देह कछु देह ।
बहुर न देही पाइये, अब की देह सो देह ॥१॥

कहै कबीरा बात दो, लखनहार लख लेय ।
कै साहब की बन्दगी, कै भूखे कछु देह ॥२॥

कहै कबीरा देह तू, जब लग तेरी देह ।
देह खेह हो जायगी, फिर कौन कहेगा देह ॥३॥

हस्ती चढ़िये ज्ञान का, सहज दुलीचा डार ।
स्वान रूप संसार है भूसन दे झकमार ॥४॥

या दुनियां दो रोज की, मत कर या से हेत ।
गुरु चरनन चित लाइये, जो पूरन सुख देत ॥५॥

स्वामी होय संग्रह करै, दूजे दिन का नीर ।
तरै न तारै और को, यों कथ कहैं कबीर ॥६॥

देह खेह हो जायगी, फिर कौन कहेगा देह ।
निश्चय कर उपकार ही, जीवन का फल यह ॥७॥

बाबूजी की स्मृति में

स्वर्गीय—श्री देवीचरन मीतल भूतपूर्व व्यवस्थापक व सम्पादक "मनुष्य बनो" २९ जून १९७६ को इस शरीर को छोड़कर अपने धाम चले गये थे। वह दाता दयाल महर्षिजी के तथा परमदयाल महाराज के अनन्न भक्त थे। अपने जीवनकाल के ५० वर्ष तक जो उन्होंने राधास्वामी पन्थ का इतिहास प्रतिपादन किया वह एक अमूल्य निधि पाठकों के लिये छोड़ गये हैं। प्रारम्भ में सुमेरु पर्वत तथा महारामायण से उन्होंने अपनी लेखनी प्रारम्भ की थी जो आज के समय में एक अमूल्य एवं अद्भुत ग्रन्थ है। जिनकी प्रतिलिपियां आज पाठकों के आग्रह पर हम उपलब्ध नहीं कर पारहे हैं। परम-दयाल महाराज की वाणी को उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा घर-घर प चाने का सतत प्रयत्न किया। वह अपने जीवनकाल की एक अमूल्य धरोहर सतसंगियों के लिये दे गये हैं जिसके माध्यम से हम पाठकों की यथोचित सेवा करते रहेंगे।

हम सब एक बार फिर उनकी पहली बर्षी पर अपना स्नेह अर्पण करके यह वचन लेते हैं कि उनके दिये हुये अनमोल रत्नों को जन समुदाय को बांटते रहेंगे।

सम्पादक

———

धन्यवाद

श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता सुपुत्र श्री हुब्बलाल जी गुप्ता रिटायर्ड कानून गो अलीगढ़ तथा मालिक फर्म वीनस ट्रेडर्स हौजकाजी दिल्ली ने मानवता के प्रचारर्थ मनुष्य बनो पत्रिका के लिये ५१) का अनुदान भेजा है। परमदयाल महाराज से प्रार्थना है कि उनकी कृपा से उनके कारोबार में और अधिक उन्नति हो और वह सदैव इसी प्रकार धर्मार्थ कार्य में सेवा करते रहें।

व्यवस्थापक

पाठकों से एक निवेदन

दाता दयाल की आज्ञानुसार "मनुष्य वनो" पत्रिका सेवा में पुनः सक्रिय हुई। यद्यपि हमारे पूज्य पिताजी के स्वर्गवास होने के पश्चात इस पत्रिका के प्रकाशन में कुछ समय के लिये रुकावट हो गई थी। मगर सरकार से स्वीकृति मिलने के पश्चात इसका संचालन पुनः था और जब यह आपकी सेबा करती आ रही है।

आप सभी जानते हैं कि इसका वार्षिक मूल्य रुपया ५)२५ पैसे है जो आजकल के समय में नाम मात्र है इससे न तो कागज की ही पैर न छपाई की ही कीमत निकलती है। इस पर भी पाठकों से ५ ४० फीसदी चन्दा इसको प्राप्त होता है। हम वार बार पाठकों विवेदन करते हैं मगर अन्त में परिणाम फिर भी निराशाजनक ा है।

हम आपसे यह निवेदन अवश्य करेंगे कि कृपया अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द प्रकाशक के नाम भेजने की कृपा करें।

हमारे पिताजी किस प्रकार इसको चलाते थे। पत्रिका की आर्थिक कठिनाई वह किस प्रकार हल करते थे यह रहस्य तो हमको ज्ञात नहीं हैं। हमने दाता दयाल को अपनी कठिनाई से अवगत कराया है और उनसे आज्ञा लेली है कि इस पत्रिका को कुछ और उपलब्धी दी जाय तथा आर्थिक दृष्टि से संतोष जनक बनाया जाय इसके लिये इस पत्रिका में बिज्ञापन भी निकाले जांय।

व्यापारी बन्धुओं से इसके लिये निवेदन है कि आपकी पत्रिका में आपके व्यवसाय को भी स्थान मिल सके तथा देश के भिन्न-भिन्न भागों में उनकी ख्याति हम पहुचा सकें यह पत्रिका आपकी सेवा के लिये तैयार है विज्ञापन दर इस प्रकार है।

आधा पृष्ठ ५०) माहवार तथा ५००) प्रति वर्ष
पूरा पृष्ठ १००) माहवार तथा १०००) प्रति वर्ष

विज्ञापन की राशि चैक के जरिये व्यवस्थापक के नाम भेजी जा सकती है।

इसके अतिरिक्त जो भी सतसंगी आर्थिक दृष्टि से इसकी सहायता करना चाहें हम उनके आभारी रहेंगे।

हम आपकी सेवा करते रहें इसके लिये आप सब का आर्शीवाद हमको मिलता रहें यही कामना है।

यह पत्रिका दातादयाल की निधि है इसको दिन दूना बढ़ा आपका भी कर्तव्य है।

श्रीमती सुधा मीतल
व्यवस्थापक

प्रवचन

परम सन्त परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज,

(२१-१२ १९७५ मानवता मन्दिर होशियारपुर)

बुढ़ापा आगया। मस्तिष्क समानता भी अब वह नहीं रही जो पहले थी। अब मैं यह सत्संग का काम करता हूँ। अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तूने क्या किया फकीर बचपन से राम को मिलने की तलाश थी जहाँ से मैं आया हूं। मैं अपने उस आधार को देखना चाहता था। मौज मेरे कर्म या भगवान की इच्छा इस तलाश के सिलसिले में मुझे हुजूर दाता दयाल जी महाराज के चरण कमलों में लेगई। वहाँ से मुझे सन्तमत मिला। उन्होंने राम और मालिक को कुछ और ही कहा। उस मालिक को ढूँढ़ने में आयु बीत गई। मालिक क्या है ? हुजूर दाता दयालजी महाराज के उद्‌गार सुनो—

तेरा भेद न जाने हाय, जगत धोखे में रहा ॥
बिन वानी का शब्द है विना अक्षर का ग्रन्थ।
बिन मन बुद्धि विवेक है, बिना डगर का पन्थ ॥
कोई कैसे आवै जाय, भरम की धार बहा।
सन्त तत्व के सिखर पर, द्वैत अद्वैत न कोय।
मन चिउँटा फिसला गिरा, बुद्धि मारती रहे सोय।
चित पंछी न उड़ाय, वहु दुख कष्ट सहा ॥
विन बादल पानी बरस, बिना बूँद का मेह।
भीजे तन मन सहज में, नगर ग्राम और गेह ॥
चहुं ओर बरसाय घटा छाई है महा।
मन अलसाना आगन बन, बुद्धि बनी अबुद्ध ॥
चित अचेत चेत नहीं, कैसे पावे सुद्ध।

नहीं सूझे जतन उपाय, किसने मर्म लहा ॥
'नेति नेति' कोई कहे, 'एति एति' कहे कोय।
'नेति एति' कोई नहीं, चतुराई गई सोय॥
जब सतगुरु भया सहाय, राधास्वामी चरन गहा ॥

ऐ भारतवासियो ! मेरे मिलने वालो ! यदि मैं जीवन में दिवाना बना और खोज की तो क्या मैं नहीं था ? हुजूर दाता दयालजी महाराज ने इस तरह से लिख दिया और स्वामी जी महाराज ने इस प्रकार से लिख दिया—

नहीं खालिक मखलूक न खिलकत। कर्ता कारन काज न दिक्कत।
दृष्टा दृष नहीं कुछ दरसत। बाच लक्ष नहिं वेद न पदारथ।
जात सिफात न अब्बल आखिर। गुप्त न परवत बातिन जाहिर।
राम रहीम करीम न केशों। कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो।

मैं राम को मिलने के लिये इस मार्ग पर आया था। उसका भेद तब मिला जब मैं राधास्वामी के चरणों में गया। जब तक कोई उसके चरणों में नहीं जाता कोई इस भेद को पा नहीं सकता। हुजूर दाता दयालजी महाराज ने अपने शब्द में लिखा है कि—

जब सतगुरु भया सहाय, राधास्वामी चरन गहा ॥

सतगुरु ने कैसे सहाय किया ? मैंने अपने आपको समय का सन्त सतगुरु कह कर इस संसार में प्रकट किया है। मैं अपना कर्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूँ। सतगुरु, जो सहायता करता है, मैं वह सहायता कर जाना चाहता हूँ। जिनके भाग्य में है वे वहां पहुंचेंगे। जिनके भाग्य में नहीं है उनको मैं कुछ नहीं कर सकता। गुरु उसकी सहायता करता है जिसकी बुद्धि उस मालिक को तलाश करती है। सतगुरु उसकी बुद्धि को साफ कर देता है। जिसकी बुद्धि स होगई वह वहां अवश्य जायेगा। मुझे छोटी आयु में राम से यह विचार मिला था कि वह भगवान या मालिक इस संसा राम या कृष्ण के रूप में आता है। इसलिये मैं राम या कृष्ण

मूरत बना कर उससे प्रेम किया करता था और राम और कृष्ण मेरे अन्तर और मेरे सामने साक्षात रूप में प्रकट होकर मेरे साथ बात चीत किया करते थे। मगर अनुभव ने सिद्ध किया कि वह राम या कृष्ण जो मेरे सामने प्रकट होते थे वह मालिक नहीं था। यह मुझे कैसे सिद्ध हुआ ? एक बार मैं एक धार्मिक मेला देखने बागवाला एक स्थान है वहां गया। वापसी पर आगे आगे कृष्ण बंसरी बजाता हुआ चल रहा था और उसके पीछे मैं था। मार्ग में गोबर पड़ा था। कृष्ण ने मुझे कहा कि यह गोबर खालो। मैं वहां बैठ गया और उस गोबर को खागया। जब मैं वापिस अपने क्वाटर पर आगया तो सोचने लगा कि किसी भक्त को राम या कृष्ण ने आज तक यह नहीं कहा कि तू गोबर खा ले। यह क्या बात है। मुझे यह विचार बैठ गया कि यह मालिक नहीं है। क्योंकि रामायण से विचार मिला हुआ था—

नाना भांति राम अवतारा, रामायण सत कोट अपारा।

२४ घन्टे लगातार रोने के बाद हुजूर दाता दयालजी महाराज के चरणों में मौज ने पहुंचा दिया। फिर उनका रूप मेरी सहायता करता रहा। सन्तमत की बाणियों में मालिक का रूप जो बताया गया है मैं उसको देखना चाहता था। हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने १९१८ में मुझे फरमाया ! मेरी आज्ञा मानो, नाम दान दिया करो और सत्संग कराया करो। तुमको निज रूप राधास्वामी दयाल के दर्शन सतसंगियों के रूप में होंगे। इस जनून में आयु बीत गई। अब तुम लोगों के अनुभवों ने सिद्ध कर दिया कि हुजूर राधा दयाल जी महाराज का जो रूप मेरे अन्दर प्रकट होता था मालिक नहीं था। कैसे ? मैं इस बार दिल्ली गया। सूबेदार नरसिंह ने मुझे अपनी घटना सुनाई। वह कहता है कि कमर पीड़ा के कारण मुझे बहुत कष्ट हुआ। मुझे अस्पताल लेगये

बहुत गाली दीं कि आप पहले मेरी सहायता करते रहते थे लेकिन अब क्यों नहीं करते। अस्पताल वालों ने पूछा कि किसको गाली दे रहे हो तो मैंने बताया कि होशियारपुर का बाबा फकीर सदा मेरी सहायता करता है लेकिन मेरी पीड़ा को दूर नहीं कर रहा इसलिये उसको गाली दे रहा हूँ। आखिर गाली देते देते थक कर सोगया। वह कहता है कि उस समय आपका रूप मेरे अन्तर प्रकट हुआ और आपने मुझसे पूछा कि क्या बात है। मैंने कहा कि कमर में बहुत पीड़ा है। आप मुझे पकड़ कर गंगा के किनारे लेगये। पानी बहुत ठंडा था। लोग इकठ्ठे होगये कहने लगे कि इस ठन्डे पानी में नहाने से यह मर जायगा। आपने गीला तौलिया लेकर मेरा सारा शरीर साफ किया। फिर जब मुझे जाग आई तो पीड़ा नहीं थी और मैं बिल्कुल ठीक होगया। अब मैं तो गया नहीं, और नहीं मुझे पता है तो वह असली मालिक नहीं है। वह तो हमारा मन का बनाया हुआ रूप है और हमारे ही विश्वास का पैदा किया हुआ ईश्वर है। किसी ने राम के रूप में उसे मान लिया। राम ने उसकी सहायता करदी, किसी ने कृष्ण के रूप में उसको मान लिया उसकी कृष्ण ने ने सहायता कर दी जिसने बाबे फकीर के रूप में मान लिया उसकी बाबे फकीर ने सहायता करदी। जिस रूप में किसी ने मान लिया उसी रूप में उसकी सहायता होगई। इसलिये यह तुम्हारा पैदा किया हुआ ईश्वर है। यह असली मालिक नहीं है। वह तुम्हारा अपना ही संकल्प है।

कल से सरसा से एक महिला आई हुई है। १३–१४ साल पहले उसके लड़के का विवाह हुआ था। कोई बच्चा नहीं हुआ। डाक्ट ने कह दिया कि इस स्त्री की बच्चादानी सड़ चुकी है। इस इसके बच्चा नहीं हो सकता। पिछले साल वह लड़की मान मन्दिर के लिये झंडा बना कर लाई और मुझे दे दिया। मैंने क कि बेटी! जिस भाव को लेकर तू आई है तेरी मनोकामना पू

हो। मुझे तो पता नहीं था कि इसके बच्चा नहीं है या डाक्टरों ने इसको क्या बतलाया है। अब उसके बच्चा होने वाला है। वह लड़की कहती है कि मैं जब झंडा लेकर गई थी तो मैंने उस समय यह सोचा था कि में बाबाजी से कुछ नहीं मागूंगी। जो कुछ वह अपनी मोज से फरमायेंगे मेरे लिए वही अच्छा होगा। जब मेरे मुँह से यह निकल गया कि "तेरी मनोकामना पूर्ण हो" तो उसको विश्वास होगया कि मेरी इच्छा अवश्य पूरी होगी और इच्छा उसको बच्चे की थी। क्या मैंने उसे बच्चा दिया ? नहीं ! सारा खेल जीव के अपने विश्वास का है। प्रतिदिन मुझे ऐसे पत्र आते रहते हैं। कोई कुछ लिखता है और कोई कुछ लिखता है। अब मैं अपने आप से पूछता हूँ कि तू तो मालिक को मिलने निकला था। क्या तुम किसी के अन्तर जाते हो और लोगों के काम करते हो ? नहीं ! कौन जाता है और कौन काम करता है ? जीब का अपना ही विश्वास और कर्म। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। इसलिये कहता हूँ कि ऐ मानव ! मालिक तो रहा एक ओर मालिक को मिलना तो बहुत दूर है यदि तुम संसार में सुखी रहना चाहते हो और सांसारिक वस्तुयें चाहते हो तो अपनी आस अपने विश्वास अपने विचार और अपनी नीयत को ठीक रखो तुम्हारे विचार में बहुत शक्ति है। मालिक को मिलना तो सबके भाग्य में नहीं है।

नानक कोटन में कोऊ नारायण जिन चेत।

Reader's Digest में एक आरटिकल छपा है। उसमें लिखा है कि असरायल का एक लड़का योरीगेलर है। वह बचपन से ही यत्न किया करता था अब उसकी will power इतनी शक्तिशाली होगई है कि यदि वह लोहे के किसी सलाख को हाथ लगाता है तो वह लोहा टेढ़ा हो जाता है। लोगों ने टेलीविजन पर उसका भाषण सुना। सुनने वालों के हाथ में यदि कोई लोहे की वस्त

थी, चाकू या स्त्रियों के हाथों में किसी धात की चूड़ियां थीं तो वे सब टेढ़ी होगई । विज्ञानिक इस बात से बहुत चकित हैं । फिजिक्स वाले अब यह कहते हैं कि उसके मन में बहुत शक्ति है और इसमें कोई धोंखे की बात नहीं है । तो सिद्ध हुआ कि शरीर से अधिक मन के विचार में शक्ति है। हुजूर दाता दयाल जी सहाराज भी यही फरमाया करते थे कि जैसा खयाल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति और जैसी करनी वैसी भरनी और वही मैं कहता हूं कि अपने विचार को ठीक रखो। तनिक सोचने की बात है कि तुम स्वप्न में डर जाते हो। उस समय तुम्हारी जवान भी हिलती है, हाथ पांव तो हिल जाते हैं स्वप्न में किसी को मुक्का भी मार देते हो कल्पित स्त्री भी बना लेते हो वीर्य भी पात हो जाता है तो इससे सिद्ध हुआ कि तुम्हारे मन में बहुत शक्ति है । जब हम राम, कृष्ण देवी देवता या किसी गुरू का ध्यान करते हो तो यह मन को इकठ्ठा करने का एक ढंग है । जिस प्रकार का विचार लेकर तुम अभ्यास करोगे तुम्हारे उस विचार को शक्ति मिलेगी और वह पूरा होगा। इसलिए जो लोग अभ्यास करते हैं उनको चाहिए कि वह अपने विचारों को ठीक रखें वरना यदि तुम्हारे अन्तर में बुराइयां हैं तो साधन से वह बुराइयां और अधिक बढ़ जायेंगी और इससे दूसरों की भी हानि होगी और उसका फल क्या होगा ? तुम्हारी भी हानि होगी यही कारण है कि मैं दूसरे गुरुओं की तरह नाम नहीं देता क्योंकि मैं जानता हूँ कि जीवों के मन तो साफ नहीं हैं जब वे साधन करेंगे और मन को इकठ्ठा करेंगे तो उनके अन्तर जो बुराइयाँ हैं वे और अधिक बढ़ जायेंगी और उनकी हानि हो जायेगी। इसलिये नाम दान सब के लिये नहीं है। नाम दान का अधिकारी कौन है-

बिषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन आसा ।
धन संतान प्रीति नहिं जाके, जगत पदार्थ चाह न ताके ।।

तन इन्द्री असक्षत न होई, नींद भूख आलस जिन खोई।
विरह वान जिन हृदय लागी, खोजत फिर साधु गुरु जागा ॥

यह परमार्थ नाम है मगर जिनको संसार चाहिए वे सुमिरन ध्यान करें। जिस प्रकार की आस लेकर अभ्यास करोगे तो तुम्हारी आस पूरी होगी। क्योंकि हमारी आस इच्छा एक नहीं होती कभी कोई इच्छा है और कभी कोई इच्छा है। इसलिए सफलता नहीं होती। कई लोग कहते हैं कि हम अभ्यास करते हैं हमारी इच्छा भी एक ही है मगर वह पूरी नहीं होती। सुनो ! जो तुम्हारे पहले विचार हैं या तुम्हारी पहली आशायें हैं उनको भोगने के बाद फिर उनका फल मिलेगा।

पहले काफी समय सतसंग करना चाहिए ताकि तुमको पहले समझ आजाये और तुम सोच समझ के साथ अभ्यास करो। पहले अपना Aim of object बनाओ। मैंने राम को मिलने के लिए अभ्यास किया था। अब तुम लोगों के अनुमतों से मुझे पता लग गया कि यदि मैं मन के चक्कर में रहूँगा तो मैं अपने आद घर नहीं जा सकता। इसलिए जानकर कोई सिद्धि नहीं करता, स्वाभाविक हो जाती है और वह भी दूसरों के विश्वास अनुसार। आदमी के विचार में बहुत शक्ति है। यदि साईं बाबा अपने बिचार से या अपने विचार की शक्ति से विभूति निकाल सकता है तो यह सम्भव है। मगर सिद्धि शक्ति करने वाला जनम मरण के चक्कर से नहीं बच सकता। साईं बाबा ने स्वयं कहा है कि वह पिछले जन्म में सरडी वाला साईं बाबा था और मरने के बाद फिर जन्म लूँगा। संसार सिद्धि शक्ति में पड़कर और सिद्धि शक्ति के पीछे पागल हो ई। यही माया का जाल है। विचार शक्ति से दूसरे ठीक हो सकते यह भी मैं जानता हूं। लोग मुझसे प्रसाद ले जाते हैं और ठीक जाते हैं। यह होता तो उनका अपना विश्वास है और उसका redit मुझे मिलता है। मैं ठीक नहीं करता तुम्हारा विश्वास

ठीक करता है । कई आदमी गंगा जाते हैं । उनका विश्वास होता है वे वहां ठीक हो जाते हैं । उनका विश्वास ठीक करता है गंगा नहीं करती आपको गुरु बताता हूं कि साधन करो मगर अपनी नीयत को साफ रखो । विचार की धार और Radiation काम करती है । उसका प्रभाव दूसरों पर पड़ता है जैसे योरी गैलर के विचार की धार से लोहा मुड़ जाता है । कई महापुरुष दूसरों का भला तो करते हैं अगर वे मन के चक्कर में आकर अहंकार में आ जाते हैं फिर वे ऊपर नहीं आ सकते स्वामी परयागलाल ने चार कोढ़ी ठीक कर दिये और अहंकार आ गया । उन चारों के नाम लिखकर उसने मुझे भेज दिये और लिखा कि "मनुष्य बनो" में छपवा दीजिए । मैंने करा दिया । उसकी सब शक्ति जाती रही और मन की दशा बिगड़ गई और बेचैनी आ गई । इसलिए जो महात्मा सिद्धि शक्ति के कारण अहंकार में आ जाते हैं । उनका जीवन का परिणाम विगड़ जाता है । सपेरा साँप से ही मरता है ।

आप लोग आ जाते हैं । मैं तो अपना कर्म भोगता हूँ । जबसे मुझे मन की असलियत का पता लगा तबसे मैं अपने आद घर जाने के लिए विवश हो गया । पता लग गया कि यह मेरा देश नहीं है । मगर आप लोगों को इसकी आवश्यकता नहीं है और साधु की सिद्धि शक्ति में आ जाते हैं मगर मैं नहीं आया । इसलिए आप लोगों से कहना चाहता हूँ कि अपने विचार को ठीक रखो । तुम्हारे विचार का प्रभाव तुम्हारे घरेलू जीवन, देश जीवन और साँसारिक जीवन पर पड़ता है । इस वास्ते सनातन धर्म कहता है कि "शिव संकल्प अस्तु", अपने विचार को ठीक रखो और मन वचन कर्म से शुद्ध रहो यदि एक महिला अभ्यास करती है और अभ्यास के बाद अप बच्चों को बुरा भला कहती है और उन बच्चों को हानि कर जायेगी । सत्संग को इसी लिए महिमा है कि सत्संग

से सच्ची समझ और विवेक मिलता है। हम अपनी गलतियों और अपने अज्ञान के कारण अपनी हानि कर लेते हैं। घरों में एक दूसरे से बड़ा द्वेष है और शत्रुता है। इन हालातों का और द्वेष का प्रभाव घर में सब पर पड़ता है। यदि लोगों से तुम अनबन (बिगाड़) है तो घर में विपत्ति अवश्य आयेगी कोई रोक नहीं सकता। यह विपत्ति चाहे बीमारी की शकल में आये चाहे मुकदमा की शकल में आये चाहे मौत की शकल में आये मगर आयेगी अवश्य। मेरी स्त्री में मेरा तेरा बहुत था किसी ने कोई बात कहदी वह कुढ़ती रहती थी। मैं उसे कहा करता था कि अपनी आदत को बदलो अन्यथा दुख उठाओगे पिछली आयु में वह ६।। साल बीमार रही। इसलिए गुरु आज्ञा बस मैंने शिक्षा को बदला है और संसारी प्राणियों को यह कहना चाहता हूँ कि अपने मन को साफ रखो और अपने बश में रखो। अपने घरों में शान्ति रखो और किसी से धोखा फरेब और हेराफेरी मत करो ताकि तुम्हारा जीवन सुख शान्ति से व्यतीत हो। यह है जीने का भेद। सुनो या न सुनो। तुम्हारी इच्छा है। मैं तो काल और कर्म का मारा हुआ हूँ और अपना कर्म भोगता हूँ। मन्दिर बना बैठा और अब बुढ़ापे में इतनी सरदी में मन्दिर के लिये बाहर घूमता हूँ। बात बिलकुल सच्ची कह रहा हूँ। गुरु केवल ज्ञान भेद और सच्ची समझ देता है, अमल तुमने स्वयं करना है।

मेरे एक मित्र के घर में सास और बहू की हर समय लड़ाई होती थी। मैंने भी कई बार समझाया। मगर किसी ने अमल नहीं किया। आखिर उस लड़ाई का क्या परिणाम निकला? एक ही था वह मर गया। मेरी साली और उसकी सास का हर समय झगड़ा रहता था। बहुत समझाया मगर कोई प्रभाव न हुआ। आखिर क्या परिणाम हुआ? डाका पड़ा और सब कुछ लेगये।

वह स्वयं टी० बी० से मरी और मुझे उसका इलाज कराना पड़ा। मेरे अपने घर में मेरी स्त्री झगड़ा करती रहती थी। मैं उससे कहा करता था कि इस लड़ाई झगड़े का परिणाम अच्छा नहीं होगा आखिर परिणाम यह निकला कि एक लड़का मर गया। मैं पहले कहा करता था कि स्त्री को पति के मरने और बेटे के मरने का सब से बड़ा दुख होता है इसलिये घरों में शान्ति से रहो और प्रेम से रहो। नीयत साफ रखो और दूसरे का माल हड़प मत करो। और यदि इससे परे जाना चाहते हों तो इसके लिये सन्तों का मार्ग है। मन का चक्कर साधुओं का है। सन्त मन से ऊँचे रहते हैं। मैं मन से ऊँचा नहीं जा सकता था। यह तो हुजूर दाता दयालजी महाराज की दया होगई। उन्होंने मुझे काम दिया और तुम्हारे अनुभवों के कारण बात मेरी समझ में आगई और मेरा काम बन गया। मैं मालिक को मिलना चाहता था। अब तुम लोग आये हो। क्या मालिक को मिलने के लिये आये हो ? तुमको तो धन धान्य और मान प्रतिष्ठा चाहिये। किसी को कोई दुख है, किसी को कोई बीमारी है, किसी का मुकदमा है किसी के पुत्र नहीं है। यह तो तुम्हारे कर्म, नीयत और विश्वास से मिलैंगे। तुम समझते हो कि गुरु तुमको देगा। नहीं ! गुरु, तुमको विधि बतायेगा, सच्चा भेद बतायेगा। तुमको सीधे मार्ग पर लायेगा। इसके अतिरिक्त यदि कुछ और तुम गुरु से आशा करते हो तो तुम भूल में हो। कोई महात्मा पब्लिक को सचाई नहीं बताता। सब अपने डेरे में बांधने का यत्न करते हैं और अपने जाल में फँसाने का यत्न करते हैं। हमारे कल्याण के लिए कोई हमको कुछ नहीं बताता। एक सत्संगी की ओर संकेत करके फरमाया कि समझते हो ! तुम्हारा स्त्री के साथ झगड़ा रहता है। इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। लाख तुम मुझे पैसे दो, दूध और मिठाई लाते रहो। तुम्हारी स्त्री भी सुन रही होगी।

कर्म जो जो करेगा तू अन्त में भोगना पड़ना।

हुजूर दाता दयाल जी महाराज का एक शब्द सुनो, वह लिखते हैं—

ऐ मेरे प्यारे भाई, देखो सम्भल के चलना।
खोटे कर्म न करना, खोटी न बात कहना॥
दुख दोगे दुख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को, फिर गम पड़ेगा सहना॥
काल और खियाल करतब, दरया से हैं मुशाबा।
तुम देखना न इनको, लहरों में पड़के बहना॥

इससे सिद्ध होगया कि जो कुछ हम बोलते हैं, करते हैं या सोचते हैं उसके प्रभाव से हम बच नहीं सकते। मगर यहां आकर मैं फेल होगया कि मन को वश में रखना अपने वश में है या नहीं। जब मैं यह सोचता हूँ कि यह अपने वश में नहीं, यह प्रालब्ध कर्मों के कारण है या इस जन्म के कर्मों के कारण है तो इस परिणाम पर आता है कि ऐसा होना ही था। सन्त कहते हैं कि यह काल की रचना है और इसमें सदा दुख और सुख है और वे जीवों को मन के चक्कर से निकलने का उपाय बताते हैं। मैं अपनी ओर देखता हूँ कि मैं ८९ साल का होगया। मेरे दिल में अब तक भी कभी कभी ऐसा विचार आजाता है जिसको मैं नहीं चाहता मगर वह आता है। मैं उसकी ज्ञान की दृष्टि से काटता हूँ और यह कह-कर अपने दिल को तसल्ली देता हूँ कि यह प्रारब्ध फल है, और यदि कर्म को आप नहीं जानते तो फिर यह मानना पड़ेगा कि इस संसार को बनाने वाला जालिम है। सन्त उसको निर्दयी जालिम और काल कहते हैं। तुम लोग यदि काल निर्दयी से बचना चाहते हो तो इससे ऊपर चले जाओ। इसकी सीमा से ऊपर चले जाओ। यहां काल का चक्कर है। यहां तो लाभ भी होगा और हानि भी होगी दुख भी होगा और सुख भी होगा। मगर यहां की हर वस्तु

में परिवर्तन आ जाता है।

Greater या कर्ता पुरुष कौन है? तुम्हारा संकल्प तुम्हारा मन काल का अंश है। सन्त कहते हैं कि यदि सदा के लिये बचना चाहते हो तो अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को पकड़ो। तुम्हारे अन्तर में बाबे फकीर का या किसी और गुरु का राम या कृष्ण का रूप आता है। वह तो तुम्हारे ही मन का रूप है। बाहर से न राम, न कृष्ण न बाबा फकीर और न कोई और गुरु आता है। जिस प्रकार का संस्कार किसी के मस्तिष्क पर होता है वही शकल बनाकर सामने आता है। इस अज्ञान के कारण संसार में धर्म पंथ और गद्दियां बन गईं और आपस में झगड़े आरम्भ होगये। देश की बाँट के समय कितने सिर कट गये। क्यों? किसी ने राम को या कृष्ण को मालिक माना, किसी ने हजरत मुहम्मद को मालिक माना और किसी ने गुरु नानक को मालिक माना। अरे ये तो सब तुम्हारे अपने ही मन के माने हुए रूप हैं। क्योंकि मेरे जिम्मे यह कर्तव्य है—

तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही।।

मैं सोचता हूँ कि हुजूर दाता दयालजी महाराज ने मुझे यह काम क्यों दिया क्या मैं जगत का कल्याण कर सकता हूँ? मैं संसार को भेद बता सकता हूँ कि ऐ मानव! तू अपने भ्रम और अज्ञान के कारण बट गया। कोई हिन्दू बन गया, कोई मुसलमान बन गया, कोई सिख ओर कोई ईसाई बन गया और तेरे अज्ञान के कारण खून की नदियां बह गईं अरब और इसरायल का झगड़ा। कहीं कोई झगड़ा और कहीं कोई झगड़ा धर्म जहां बरकत की वस्तु थी वहां उसको बरकत की वस्तु बना दिया गया। धर्म तो वह है जिस आदमी को शान्ति मिले सन्तों ने जब देखा कि लोग धर्म और ईश्वर के नाम पर लड़ाई झगड़े कर रहे हैं तो उन्होंने यह ज्ञान दिया

कि भाई ! संसार को पैदा करने वाला तो नूर है, प्रकाश है सावित्री है। वह एक है। तुम अपने अज्ञान के कारण बट गये। मगर जब तक हम यहाँ हैं दुख और सुख का प्रभाव हम पर अवश्य पड़ेगा। हां शिव संकल्प अस्तु के उसूल पर चलने से किसी सीमा तक इस अज्ञान से बच सकते हो। यह काल का जगत वहुत बड़ा है। कहां तक बचोगे ? हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने काल के बारे में मेरे नाम एक शब्द लिखा था।

कालचक्र का सहज हिंडोला, झूला अचरज न्यारा।
सब कोई झूले झूला चढ़कर, काल झुलावन हारा।
चन्द्र सूर दोऊ गगन में झूलें, झूलें नौ लख तारे।
जीव जन्तु, पृथ्वी में झूलें, नर पशु सकल विचारे।
राजा झूला रानी झूली, और प्रजा समुदाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर झूलें, झूली झूली सब दुनियाई।
लक्ष्मी झूली दुर्गा झूली, गायत्री महारानी।
देवा झूले देवी झूले, जल थल अग्नी पानी।
काल भी झूला अपने झूला, सृष्टि प्रलय कर प्यारे।

काल क्या है ? उदाहरण से समझो। हमारी बैटरी में E.M.F. है। उसमें से करन्ट निकलती है। उससे पंखे चलते हैं, बल्व जलते हैं और मोटरें चलती हैं। फिर वह करन्ट वापिस वहां ही चली जाती है जहाँ से आई थी। ऐसे ही हमारा जीवन है। हम अलख अगम से निकल कर यहां आये हैं। जब तक जीवन है तब तक गति रहेगी। सबसे पहले जो वस्तु गति में आई वह काल है। यहाँ एक काल नहीं है। जैसे एक बैटरी में से कई सरकट निकलते हैं ऐसे ही उस मालिक की रचना में पता नहीं कितने विष्णु कितने ब्रह्मा और कितने शिव हैं, कितने लोक लोकान्तर और कितने आकाश और ताल हैं। कोई अन्त नहीं पा सकता। एक किरण जिसने यह संसार बनाया है जब वह वापिस चली जाती है तो उस समय

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

प्रलय हो जाती है ।

जो उपजे सो विनसे ।

संसार वे अन्त है । अनुभव इसको जानता है । अनुभव में आकर मस्त हो जाता हूँ । हजूर दातादयाल जी महाराज फरमाते हैं कि जो वस्तु गति में है वह झूलती है । हम अडोल अवस्था में आये हैं ।

चढ़ी पैंग तब ऊँचे आये, उतरी नीचे ठहरे ।
कभी मिले तो जमघट देखी, बिछुड़ के होगये न्यारे ॥
एक दशा में नित जो बरते, कोई नजर न आया ।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया ऋषि मुनि बचन न पाया ।
पीनी यथा भाप की सूरत धाया गिरि कैलासा ।
बरफ बना धारा बह निकली, नीचे किया निवासा ।
नीचे भी रहने नहीं पाया, फिर ऊंचे की आसा ।
हम तो देखें खुली दृष्टि से, अचरज अजब तमाशा ।
लकड़ी जलकर कोयला होगई, कोयला राख और माटी ।
माटी माटी में नहीं ठहरी, बनी काठ और लाठी ।
विष्टा अन्न अन्न भया विष्टा, सोई सब कोई खावे ।
यह प्रपंच है अद्भुत न्यारा, कोई विरला सख माने ।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती लीला, कभी ऐसी कभी वैसी ।
यह सब काल बली की माया, कभी जैसी कभी तैसी ।
पंडित कभी अनाड़ी होते, कभी अज्ञानी ज्ञानी ।
कभी जड़ मिल जुल चेतन ठहरे, कभी चेतन जड़ जानी ।
समझत बने कथन नहीं आवे, मन वानी अलसानी ।
कैसे कोई समझाते किसको, समझे कोई गुरु ज्ञानी ।
एक दशा में कोई न करते, कभी बैठा कभी दौड़ा ।
कभी थका कभी सोया लेटा, काल चक्र अति चौड़ा ।
झूले की है विचित्र कहानी, कथा वारता न्यारी ।
नर को हम समझावन आये, सुने न बात हमारी ।

दुख सुख दुख सुख द्वन्द पसारा, द्वन्द से प्यार बढ़ाया ।
द्वन्द भाव से जगत रचाना, द्वन्द के फाँस फँसाया ।
मन बुद्धि और चित हंकारा, सो झोले की रसरी ।
दोलड़ त्रयलड़ चौलड़ बन आई, जीव निबल को जकड़ी ।
जकड़े माया के फंदे में, रोये और चिल्लाये ।
शोर मचाये बहु चिल्लाये, छूटन विधि नहीं ।

मैं जब हजूर दातादयाल जी महाराज के पास जाता तो बहुत रोता और जब वापिस आता तो बहुत रोता । हर समय मेरा रोना ही रोना था ।

तब दयाल को दाया लागी, सन्त रूप धर आया ।
राधास्वामी अचल मुकामी, शालिग्राम कहाया ।
नर शरीर में प्रगटा आकर, जीवन बहुत चिताया ।
जो कोई जीव शरन में आया, अपना कर अपनाया ।

मेरे पास लोग आते हैं । किसी के लड़का नहीं है । किसी का लड़का बीमार है । किसी का कारोबार नहीं है । किसी को कोई दुख है और किसी को कोई कष्ट है । क्योंकि उनका विश्वास होता है । इसलिये उनके काम हो जाते हैं । लेकिन जो कुछ मैं देना चाहता हूँ । उसको लेने के लिये कोई तैयार नहीं । तुमको जो कुछ मिलता है वह तुम्हारे ही कर्म, श्रद्धा, नीयत और विश्वास से मिलता है । लोग मुझसे प्रशाद ले जाते हैं और उनके [illegible] हो जाते हैं । लेकिन मेरी लड़की के कोई बच्चा नहीं है । [illegible]ाल उसके विवाह को होगये । मैंने कई बार प्रसाद दिया है । सब विश्वास का खेल है । लेकिन यह सब काल का चक्कर है [illegible] लोग इससे निकलना नहीं चाहते । मैं निकलना चाहता था ।

सुन फकीर यह गुरु उपदेशा, मैं भी तुझे सताऊँ
बात जो मेरी मन से माने, इस झूले से बचाऊँ
खेल खिलाऊँ सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊँ
काल हिंढोले से तू बाचे, विधि विचित्र समझाऊँ ।

काल हिंडोले से निकलने के लिए उन्होंने मुझे यह काम दिया था। मेरा द्वैत भाव नहीं जाता था। मैं तो हुजूर दाता दयाल जी महाराज के सुन्दर मुखड़े से बँधा हुआ था जब तक कोई आदमी बाबे फकीर राम, कृष्ण या किसी और गुरु के मुखड़े से जुड़ा हुआ है। वह काल के चक्कर में है इससे उसमें सिद्धि शक्ति भी आजायेगी, लड़के भी होजायेंगे, लड़कियां भी हो जायेंगी और संसार के और काम भी होते रहेंगे। मगर काल के चक्कर से निकल नहीं सकोगे। मुझे इस बात की समझ नहीं आती थी। इसलिए उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि फकीर! तुमको काम देता हूं। नाम दान दिया करो और सत्संग कराया करो। तुमको सच्चे सत्गुरु, राधास्वामी दयाल के दर्शन से सत्संगियों के रूप में होंगे और अब होगये अब मुझे विश्वास होगया और तुम्हारे अनुभवों के कारण विश्वास पक्का होगया। इसलिये अब मैं अपनी सुरत को प्रकाश और शब्द में ले जाने का यत्न करता रहता हूँ। स्वामी जी महाज ने लिखा है कि सत्गुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं और उनके चरण प्रकाश हैं। मगर जो वहां तक जा नहीं सकते उनके लिये सुमिरन और ध्यान है और प्रकाश और शब्द आगे जाने के लिये है।

कर सतसंग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी।
साधु बनाकर साधले युक्ति, जा भूले के पारी॥

वह फरमाते हैं कि समझ बूझ के साथ सत्संग कर। पिछले जमाने में सैन बैन से काम लिया जाता था इसलिये उस सैन बैन को साधारण लोग नहीं समझ सकते थे। मैंने इशारे छोड़ दिये

और डेरे नहीं बनते। मैं यदि परदा रखता तो अज्ञान में आकर तुम लोग मुझे धन देते। अब कौन देता है। मगर मैं क्योंकि समय का सन्त सत्गुरू हूँ इसलिए मेरी यह कर्तव्य है और हजूर दातादयाल जी महाराज की आज्ञा भी है। इसलिए मैंने शिक्षा को बदल दिया है। हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज फरमाया करते थे सत्संगों में, कि तुम लोग मेरी बात को नहीं सुनते कोई डण्डेमार आयेगा फिर तुम मानोगे। मैं हूँ वह डण्डेमार। जिनके भाग्य में है वे मेरे डण्डे सहें, मेरी बात को समझे और अपना जन्म बनायें।

नर शरीर सुर दुर्लभ पाया, सतसंगत में आया।
तेरा दाँत पड़ा है पूरा, सोच समझ तज माया॥

वह कहते हैं कि सोच समझ के माया को तज। मुझसे तजी नहीं जाती थी। यह समझ मुझे तुम लोगों से मिली। इसलिये तुम लोगों को मत्था टेकता हूँ और अपना सत्गुरु मानता हूं। मैं अभी भीलवाड़ा गया वहाँ श्री कृषक जी को दोनों समय मत्था टेकता था और आते समय उनको पांच सौ रुपया देकर आया हूँ कि अपनी आंखों का मोतिये का आपरेशन करालो।

तेरा भेद न जाने हाय, जगत धोखे में रहा।

वह भेद क्या है? कोई राम को ईश्वर समझता है, कोई कृष्ण को ईश्वर समझता है, कोई प्रकाश को ईश्वर समझता है, कोई हजरत मुहम्मद को और कोई गुरू नानक को ईश्वर समझता है, कोई बाबे फकीर को और कोई किसी और गुरू को ईश्वर समझता है। असल में यह ईश्वर नहीं।

बिन बानी का शब्द है, विना अक्षर का ग्रन्थ।
बिन मन बुद्धि विवेक है, बिना डगर का पन्थ।
कोई कैसे आवे जाय, भरम की धार बहा।

बाणी के बिना शब्द है और मन और बुद्धि के बिना विवेक है। न समझेगा? मेरी सुरत जब प्रकाश और शब्द में जाती है तो

वहाँ मन तो होता नहीं और न ही वहां बुद्धि होती है। वहाँ तो केवल Zeeling of resistance होती है। यह है मन और बुद्धि के बिना विवेक होना। दया तो हजूर दातादयाल जी महाराज की है मगर वहाँ तक पहुंचाने वाले तुम लोग हैं। दयालदास आदि को मैंने नाम दान देने की आज्ञा इसलिये दी है कि यदि इनकी आगे जाने की इच्छा हो तो इनको समझ आ जाये। कमालपुर वाली माई के अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ। उसने मुझे बताया। मैंने उसको कहा कि तुम स्त्रियों को नाम दान दिया करो। उसने काम शुरू कर दिया। जब उसका रूप स्त्रियों के अन्तर प्रकट होने लगा तब उसको समझ आई। अब यदि ये लोग दूसरों को लूटेंगे तो स्वयं फँस जायेंगे। वह जो अवस्था है जहाँ मन नहीं है वहाँ जाना बहुत कठिन है।

सत्त तत्व के सिखर पर, द्वैत अद्वैत न कोय।
मन चिउटा फिसला गिरा, बुद्धि माखी रही सोय।
चित्त पक्षी न उड़ाया, बहु दुख कष्ट सहा।

जब सुरत आगे चली जाती है तो वहाँ न गुरु है न चेला है, न मन है न चित्त हैं न बुद्धि है न अहंकार है। वह हमारी अपनी ही आद अवस्था है। जैसे E. M. F. अपने आप में कायम है ऐसे ही हमारी दशा है। वह मालिक अपनी जात में आप कायम है। जो वहाँ जाना चाहता है उसके लिए यह मार्ग है। पिण्ड अण्ड ब्रह्मण्ड से परे जाओ जो इनसे परे जायेगा। उसके लिए आवागमन नहीं है।

बिन बादल पानी बरस, बिना बुन्द का मेह।
भीजे तन मन सहज में, नगर ग्राम और गेह।
चहुं ओर बरसाय घटा, छाई है महा।

जिसकी सुरत वहाँ ठहर जाती है उसको शान्ति मिल जाती है। जैसे बाहर में सारा दिन काम करने से थकावट हो जाती है और

फिर बहुत गहरी नींद आने से सुख मिलता है ऐसे ही जिसक। सुरत वहाँ आद अवस्था में पहुंच जाती है उसको शान्ति मिल जाती है और शान्ति ही लक्षण है। वह आद अवस्था क्या है ? जानता हूँ, कभी वहाँ रहता भी हूं मगर वहाँ ठहरा नहीं जाता। क्यों ? पता नहीं। नथ खसम दे हथ। उस मालिक में हम पहले इस प्रकार थे जैसे दूध में मक्खन। उस समय मक्खन की अपनी हस्ती नहीं होती जब यह सुरत वापिस अपने घर चली जायेगी तो उसकी हस्ती समाप्त हो जायेगी केवल एक तत्व था एक जात बाकी रह जायेगी। एक शरीर की नींद है, एक मन की नींद है। वह है निर्विकल्प समाधि। शब्द को सुनना रूह की नींद है। सुरत की नींद है अनामी धाम। अपनी जात में गुम हो जाना यही हमारा प्रारम्भ है और यही हमारा अन्त है। वहां मैं और न तू न गुरू न चेला। ये चार अवस्थायें हैं। मैंने नींद कह दिया और सन्तों ने सुन कह दिया।

तीन सुन के पारा वह है देश हमारा।

गहरी समाधि में तुम सब कुछ भूल जाते हो।

मन अलसाना अमन बन, बुद्धि बनी अबुद्ध।
चित अचेत चेते नहीं, कैसे पावे सुद्ध।
नहीं सूझे जतन उपाय, किसने मर्म लहा।

अभ्यास करते हुये मन अमन हो जाता है चित अचित हो जाता और बुद्धि अबुद्धि हो जाती है। वह अवस्था अपने आद घर की है। गुरु नानक साहिब ने उस अवस्था को उनमुन अवस्था कहा है केवल शब्दों का फेर है। किसी को यह मरम नहीं मिलता। यह मरम केवल बाहर का गुरू देता है।

'नेति नेति' कोई कहे, 'एति एति' कहे कोय।
'नेति एति' कोई नहीं, चतुराई गई खोय।
जब सतगुरु भये सहाय, राधास्वामी चरन गहा।

जब तुम गहरी नींद में चले जाते हो तो उस समय कुछ याद

नहीं होता। ऐसे ही जब्र जाग्रत में आदमी उस अवस्था में पहुंच जाता है तो नेति ऐति कैसी ? कबीर साहिब और राधास्वामी दयाल ने उस अवस्था को अनामी धाम कहा है। मैं अहंकार नहीं करता। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान और सच्चे भेद का और मैं वह ज्ञान और भेद देता रहता हूँ। गंगा बह रही है। नहा लो। यदि नहा नहीं सकते तो हाथ मुँह ही धो लो। छींटे ही ले लो या इसके किनारे सैर ही करलो कम से कम ठन्डी हवा ही लगेगी। मैंने समझाने में कोई कमी नहीं छोड़ी। मैं अपने आपसे पूछता हूं कि फकीर ! तेरे पास लोग आते हैं तुम इनके लिए क्या कर सकते हो ? मैं शुभ भावना देता हूँ। सच्चे दिल से चाहता हूं कि जिस नीयत से मेरे पास कोई आता है। उसकी मनो कामना पूरी हो। इसके सिवा मैं और कुछ नहीं कर सकता। दूसरे महापुरुष शायद कर सकते हों तो मुझे पता नहीं। बाकी जों आदमी मुझपर विश्बास करते हैं। उनके काम बन जाते हैं। विश्वास करना तुम्हारा काम है। मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही ठींक है। प्रकृति का अन्त किसी को नहीं मिलता। जिसके बात समझ में आ गई वह तर गया। लोग आते हैं। मैं चाहता हूं कि दाता इनकी मनो कामनाऐं पूरी करे। यही कुछ मैं कर सकता हूँ। दूसरे जो कुछ मैंने समझा वह बता दिया।

सबको राधास्वामी।

—००—

* साखी *

काया कमंडल कर लिये, तुम जल निर्मल नीर।
पीवत तृषा न भाजही, तिर्षावन्त कबीर। (१)
मन तो उलट दरिया मिला, लागा मल मल न्हान।
थाह में थाह न पावई, केहि विधि कहूं बखान। (२)

आदर्श भारती महिलायें—

ऋषि दत्ता

दातादयाल महर्षि शिवव्रतलाल बर्मन एम० ए०

(१)

मध्य देश में रथमर्द्दन नाम एक नगर था। वहां का राजा हेमरथ था और उसका लड़का कनकरथ कहलाता था। रानी का नाम स्वयशस था। यह लड़का बड़ा ही शूरवीर, सुन्दर और सुशील था। मध्य देश इसके शुभ गुणों से वैसा ही सुशोभित था जैसे कमल का खिला हुआ फूल तालाब की शोभा को बढ़ाता है। उस देश के नव युवक उसको अपना आदर्श समझते थे। मसल है "जैसा राजा वैसी प्रजा" परन्तु इस राजकुमार की दशा देखकर कहना चाहिये कि "जैसा राजा का लड़का वैसी ही प्रजा की सन्तान।" राजा के सद्भाव का प्रभाव प्रजा पर पड़ता है। राजा के लड़के जैसे भले या बुरे होंगे वैसी ही प्रजा की भी सन्तान होगी।

उस समय काबेरी नदी के किनारे सूरसुन्दर राजा राज करता था। उसका राज्य कांबेरी कहलाता था। उसकी रानी का नाम वासूला था। उनकी लड़की रुक्मिणी बड़ी ही रूपवती थी जब वह सयानी हुई माँ बाप उत्तम वर की खोज करने लगे उनको पता लगा कि हेमरथ का लड़का कनकरथ उसके लिये योग्य वर हैं। सूरसुन्दर ने अपने पुरोहित को भेजा कि मध्य देश के राजा से बातचीत करके उसके राजकुमार को बुला लाये जिससे उसके साथ राजकुमारी का ब्याह कर दिया जाये।

पुरोहित वहां गया। हेमरथ भी लड़के के लिये योग्य कन्या की खोज में था। राजकुमार बहुत से आदमियों के साथ बाप की आज्ञा पाकर काबेरी की ओर चल निकला।

(२)

अभी वह राह ही में थे कि एक मनुष्य उनको मिला। उसने कहा, "मेरा राजकुमार अरिदमन जंगल में शिकार खेलने आया है। वह तुम्हारे साथ लड़ना चाहता है।" ऐसा अनुमान किया जाता है कि अरिदमन को

रुक्मिणी के साथ विवाह करने की इच्छा थी और वह कनकरथ को जो राह का कांटा बन रहा था दूर करना चाहता था। कनकरथ व्यर्थ मारधाड़ करना नहीं चाहता। फिर भी वह क्षत्री था। कैसे सम्भव था कि कोई शत्रु उसको लड़ने के लिये ललकारें और वह उसका सामना न करे! क्षत्री का धर्म्म महा कठिन है। कभी कभी यह लड़ना भिड़ना नहीं चाहते परन्तु शत्रु से सामना करने में हिचकिचाना या लड़ाई के मैदान से भाग जाना भी तो अधर्म्म है। कोई सच्चा क्षत्री धर्म्म से पतित होना कदापि नहीं चाहता। अन्त में लड़ाई हुई। अरिदमन हारकर जंगल में भाग गया और यती का जीवन व्यतीत करने लगा। यह नही पता चलता कि उसके तपस्या का फल क्या हुआ!

(३)

कनकरथ की सेना आगे बढ़ी। एक महा भयानक मैदान राह में आया जिसमें कहीं पानी नाम मात्र के लिये नहीं था। मनुष्य और पशु प्यास से तड़फने लगे राजकुमार ने कई सवारों को पानी की खोज में इधर-उधर भेजा और समझा दिया कि "जहां कहीं वृक्ष और हरियाली देखो समझ लो कि वहां पानी अवश्य होगा।" यह जाकर देर तक ऐसी जगह ढूँढ़ते रहे और कई घन्टे के पीछे लोटे। राजकुमार ने पूछा, "तुम लोगों ने देर क्यों की?" उत्तर मिला, "यहाँ से थोड़ी दूर पर एक झील है जिसके किनारे खजूर और केले के वृक्ष बहुतायत से लगे हुये हैं। वहां हमको एक बहुत ही सुन्दर लड़की दिखलाई दी और फिर दम के दम में लापता होगई। उसे देखकर हमें आश्चर्य हुआ। वह इस भयानक बन में वैसी ही दिखाई दी जैसे साँप के मुँह में मणि या काली घटाओं में बिजली। पता नहीं वह कौन है और कौन नहीं है! हमारा विचार था कि आप उसको देखकर प्रसन्न होंगे इसलिये उसकी खोज में देर हुई।"

राजकुमार यह सुनकर झील की ओर चल खड़ा हुआ। से लड़ाई के बाजे बजाती हुई चली। सब झील के किनारे पहुंच गये। स वश या भाग्यवश वह लड़की फिर वहां बिखाई दी। राजकुमार उसे देख

सन्नाटे में आ गया और मन में कहने लगा कि "यह इन्द्र की अप्सरा है या नाग कन्या है ! ऐसी रूपवती स्त्री मैंने आज तक नहीं देखी। कोयले की खान में यह हीरा कैसा ! छिचले गढ़े पानी में ऐसा चमकदार और बहुमूल्य मोती कहां से आ गया ! वह इसी सोच विचार में था कि वह लड़की आंखों से ओझल हो गई। राजकुमार की आज्ञा पाकर लोग झील के किनारे और आसपास उसे ढूढ़ने लगे।

थोड़ी ही दूर पर एक फूस का झोंपड़ा दिखलाई दिया। उनको विश्वास हो गया कि 'हो न हो वह लड़की इसी में रहती होगी।" आगे बढ़े। झोंपड़े के निकट ऋषभ देव की मूर्ति खड़ी थी। सब ने समझ लिया कि यहां कोई जैनी यती रहता है। राजकुमार भी जैनी था। उसने मूर्ति की पूजा की और स्तुति गाकर कहा, "आज मेरा भाग्य उदय हुआ। यात्रा में तीर्थङ्कर का दर्शन पाना शुभ है।" जब वह पूजा कर रहा था वहाँ उसी समय एक जटाधारी यती आया। उसके साथ टोकरी में फूल लिये हुए वह लड़की भी थी। राजकुमार ने लड़की को और लड़की ने राजकुमार को देखा दोनों के हृदय में एक दूसरे का प्रेम उत्पन्न हुआ। राजकुमार की तरह लड़की भी सोचने लगी "कहीं इन्द्र देवता तो नहीं है जिसकी कथा सद् शास्त्रों में आई है और क्या वह यहां ईश्वर की पूजा के लिये आया हुआ है !"

जब वह यती ऋषि पूजा कर चुका आप ही आप राजकुमार से कहने लगा, 'यहां कोई भी नहीं आता। तुमको तुम्हारा सौभाग्य यहाँ लाया है। मेरे झोंपड़े में आकर विश्राम करो। अपनी सेना को भी कह दो कि झील के किनारे किनारे खेमा डाल दे। मैं साधू हूं। मेरे साथ इस लड़की के अतिरिक्त और कोई नहीं है मुझसे जहाँ तक होगा मैं तुम्हारी सेवा करूँगा। साधू के घर में फल फूल, जड़ी बूटी और कन्दमूल के अतिरिक्त क्या मिलेगा कन्दमूल ही हमारा आहार है। इनको खाकर और झील का पानी पीकर यहां रहते हैं और ईश्वर की भक्ति करते हैं।"

राजकुमार ने हाथ बांधकर उसको नमस्कार किया और झोंपड़े में आया।

ऋषि ने पूछा, "तुम कौन हो ? और कहां से आये हो ? क्यों आये हो ? तुम्हारे इतनी भीड़ भाड़ क्यों है ? क्योंकि इस स्थान का पता केवल इने गिने साधुओं को है जो यहाँ रह गये हैं। दूसरे इसको नहीं जानते।"

राजकुमार ने अपना वृतान्त ज्यों का त्यों उसको सुना दिया। ऋषि बोला, "मैं तुम्हारे बाप दादा को भली भांति जानता हूँ। तुम्हारे यहाँ आने आने से मैं बहुत ही प्रसन्न हूँ।"

फिर राजकुमार ने पूछा, "मैंने अपनी कथा कह सुनाई। यदि कोइ हर्ज न हो तो आप भी बताइये कि आप कौन हैं ? यह मंदिर यहां किसने बनाया ? ऋषभदेव की यह बड़ी और उत्तम मूर्ति यहां कैसे आई ? यह लड़की कौन है ? और इस सुनसान जगह में इसका क्या काम है ? इस तो किसी राजमहल में रहना चाहिये था।"

ऋषि हँसा, "मेरी कथा बहुत बडी है। तुम विश्राम करलो, थकावट दूर हो जाये फिर मैं अपनी राम कहानी तुमको सुना दूँगा।"

(४)

साधू ने राजकुमार को भोजन करने के लिये कहा। लड़की ने कन्द मूल आग भूने। उसके छिलके दूर किये और कमल के पत्तों पर जड़ी, फल, फूल, साग और भाजी सजाकर ले आई जिसमें नमक तक नहीं था। राजकुमार ने प्रेम के साथ भोजन किया। जब सब खा पी चुके ऋषि ने कहा, 'यदि अब तुम्हारी इच्छा हो तो मैं अपनी कथा तुमको सुना दूँ।"

कनकरथ ने कहा, "आपकी बडी ही कृपा होगी। मैं स्वयं आपसे प्रार्थना करने वाला था।"

ऋषि बोला :—भारतवर्ष में अमरावती नामक एक नगर है। वहाँ हरिसेन राजा अपनी रानी प्रिय दर्शनी के साथ राज करता था। उसके

एक लड़का था जिसका नाम जिनसेन था। एक दिन कोई मनुष्य एक घोड़ा लाया जिसको उल्टी शिक्षा दी गई थी—अर्थात वह एड़ लगाने चुप चाप खड़ा हो जाता था और लगाम खीचने पर सरपट दौड़ता था। घोड़ा देखने में बहुत ही अच्छा था। राजा ने उसको पसन्द किया और सवार हो गया। जब उसने उसके रोकने के लिये लगाम खीची घोड़ा उछल पड़ा और हवा से बातें करता हुआ एक जगह ले आया जहाँ कोई साधू रहता था। साधू ने उसे देखकर प्रसन्नता प्रकट की और बोला बेटे! मेरी मृत्यु निकट है। मुझको साँप के विष उतारने का मंत्र आता है। मैं चाहता था कि मरने के पहले किसी को बता जाऊँ जिससे यह विद्या गुप्त न होने पाये। अब तुमको बताता हूं। देखना! जिसका इलाज करना उससे इसके बदले में कुछ भी न लेना।" साधू ने राजा को वह मंत्र सिखाया और घोड़े की उल्टी शिक्षा का भेद भी बतालाया। मन्त्र सिखाने के पीछे उसने राजा को विदा किया और घोड़ा फिर उसकी राजधानी में पहुँच गया।

राजा के आने पर उसकी प्रजा ने उत्सव मनाया और वह फिर पहिले की तरह राज काज का काम करने लगा।

एक दिन उसके पास एक सवार आया। उसने कहा, "महाराज! मंगलावती नगर में राजा प्रिय दर्शन की रानी विद्युत प्रभा की लड़की प्रीतिमती को साँप ने डस लिया है। आप चलकर उसका इलाज कीजिये। राजा ने प्रार्थना स्वीकार करली। वह सांडनी की सवारी पर वहां आया। उसके इलाज से राजकुमारी अच्छी हो गई। प्रिय दर्शन ने कहा, "तुमने इस लड़की की जान बचाई है इसलिये मैं तुम्हीं को भेंट देता हूँ।" हरिसेन ने उत्तर दिया, इलाज के बदले में मैं कुछ भी नहीं ले सकता। यह गुरू की विद्या है। प्रिय दर्शन हँसा, 'फीस रुपये या जवाहिरात के रूप में दी जाती है यह लड़की उसके बदले में नहीं दी जाती किन्तु यह तुम्हारे योग्य है।" हरिसेन ने विवाह कर लिया और प्रीतिमती के साथ राजमहल में लौट आया। कुछ दिनों राज करता रहा। उसका लड़का सयाना था। राजा ने उसको राज सौंप दिया और आप विश्व भूति यती से दीक्षा पाकर तप

करने लगा। राजा और रानी दोनों ही तप करते थे परन्तु पाँच महीने पीछे पता लगा कि रानी गर्भवती है। यती यह दशा देखकर बहुत बिगड़ा। राजा ने रानो से पूछा, "यह क्या बात है ?" रानी बोली गर्भ पहले ही से था तुम को इसलिये नहीं बताया कि तुम मुझको अपने साथ वन में न लाओगे और मैं तप के फल को प्राप्त न कर सकूँगी।" तपस्वी तो जगह छोड़कर चले गये। राजा और रानी दोनों दुखी थे परन्तु करते क्या ! वहां अकेले रहने लगे। नौ महीने पीछे रानी ही के रूप की एक लड़की उत्पन्न हुई। ऋषि के झोंपड़े में जन्म होने के कारण उसका नाम ऋषिदत्ता रक्खा गया। रानी बड़ी ही सुकुमारी थी। प्रसव का दुख न सह सकी। मर गई। उसके श्राद्ध के पीछे राजा ही को पालन पोषण करना पड़ा। जब वह आठ वर्ष की हुई बाप ने देखा लड़की बड़ी ही सुन्दरी है ऐसा न हो कि उसको कोई आकर उठा ले जाये। इस विचार से वह लड़कों के भेष में रहने लगी। बाप ही ने शास्त्र पुराण इतिहास और गाथायें पढ़ाकर उसको सुशिक्षिम बनाया। ऐ राजकुमार ! में वही हरिसेन हूँ और यह लड़की ऋषिदत्ता है।

(५)

राजकुमार यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुआ और ऋषिदत्ता को प्रेम की दृष्टि से देखने लगा। इसने भी इसे देखा दोनों एक दूसरे पर मोहित हो गये, दोनों एक दूसरे को टकटकी बाँधकर देखते रहे मानों मन ही मन कह रहे थे :—

"नैनों अन्दर आव तू, नैन झांप तोहि लूँ।
ना मैं देखूँ और को, ना तोहि देखन दूँ ॥

उनकी क्या दशा थी इसे केवल वही ससझ सकते हैं जिनको कभी ऐसा अवसर मिला है या जो प्रेम के तत्व को समझते हैं।

"नैनों की कर कोठरी, पुतली पलंग विछाय।
पलकों की चिक डालकर, प्रेमीय लिया रिझाय ॥"

ऋषि उनके भावों को झाँपकर कहने लगा, 'राजकुमार ! यह लड़की तझको देता हूं। इसको लेजा प्रेम से रख।" राजकुमार ने कहा, 'मैं आपकी

इस अमूल्य भेंट को सहर्ष स्वीकार करता हूँ।" तब ऋषि बोला, "अच्छा ! अब तुम अपने खेमे में इसको लेकर चले जाओ यहां गृहस्थियों को रहने की आज्ञा नहीं है।" राजकुमार ने हाथ बांधकर कहा, 'आप भी मेरे खेमे में चलिये। वहाँ हम सब लोग आपका प्रसाद पायेंगे।" ऋषि ने उत्तर दिया, 'तुम राजा हो। राजा की आज्ञा ऋषि मुनि साधू महात्मा सभी मानते हैं परन्तु खेमे में जाना और जाकर रहना मेरे धर्म के विरुद्ध है। जो काम मैंने अब तक नहीं किया वह क्यों करूँ ?"

राजकुमार ऋषिदत्ता को लेकर खेमे में चला आया। कई दिन तक वह वहां रहा। चलते समय वह विदा होने के लिये ऋषि के पास गया। उसने कहा, मैं तुम्हें दो चार बातें बतलाता हूँ। उनको यदि याद रक्खोगे तो दुख से बचे रहोगे। पहिली बात यह है कि धर्म और न्याय के साथ राज करना। राजा का न्याय किसी तपस्वी की तपस्या से कम नहीं होता। दूसरी बात यह है कि ऋषिदत्ता का पालन पोषण जंगल में हुआ है। यह महलों के रहन सहन को नहीं जानती। एक दम सीधी सादी है। इसका हृदय बड़ा ही कोमल है। तुम कभी कोई ऐसी बात न कहना और न करना जिससे उसको दुख पहुंचे नहीं तो यह शीघ्र ही मर जायेगी। इसमें सादगी के साथ बहुत से गुण हैं जो बड़े घर की स्त्रियों में भी नहीं होते। इसमें सांसारिक सभ्यता की कमी अवश्य है परन्तु तुम जानते हो कि जंगल की गर्द कस्तूरिया हिरन की नाभीं में जमकर कस्तूरी बन जाती है। ठीक इसी प्रकार यह इस जंगल की गर्द तुम्हारी संगत से कस्तूरी हो जायेगी। तुम जाओ सुखी रहो। मेरा अन्त समय निकट आ गया है। अब मैं इस शरीर को अग्नि के अर्पण करूँगा।" राजकुमार उसके पाँव पर गिरा, "आत्म हत्या का शब्द मुख से न निकालिये।" ऋषिदत्ता बोली, "मुझ पर दया कीजिये।" ऋषिदत्ता ने उत्तर दिया, 'लड़की तू क्या चाहती है ? जा अपने पति के साथ प्रेम से

रह। यदि इसकी और भी रानियां हों तो उनसे सौतिया डाह न करना। सबके साथ प्रेम करना। हँसते हुये गुलाब की तरह रहना। जो तुम्हारे सामने आये वह भी प्रफुल्लित हो जाये। घृणा, ईर्षा और राग द्वेष जीवन के विष हैं प्रेम और प्यार अमृत हैं। दुख हो या सुख, अधर्म का ध्यान भी मन में न आने पाये। यह शरीर नाशवान है। आज है कल नहीं होगा। कल था आज न रहेगा। इसका रखना व्यर्थ और निरर्थक है। मेरा अन्त समय आ गया है। मुझको इसका ज्ञान है। फिर मैं जान बूझकर क्यों न अभी से इस शरीर को भेंट कर दूँ! यह आत्म हत्या नहीं है। यह चेत के साथ शरीर का त्याग करना कहलाता है।"

यह कह कर ऋषि ने चिता बनाई, आग लगाकर उस पर बैठ गया और जिनेश्वरों की महिमा की स्तुति गाता हुआ जलकर भस्म हो गया।

ऋषिदत्ता रोने और विलाप करने लगी, "आह! पिताजी! तुम मुझको बहुत प्यार करते थे। मैंने माँ का मुख तक न देखा। तुम ही मेरे मां बाप दोनों थे। जब केले की जड़ कट जाती है वह गिर पड़ता है। आज तुम्हारी मृत्यु से मेरी जड़ कट गई। मैं दुख के अथाह सागर में डूब रही हूँ।

कनक रथ ने प्रेम के साथ उसके आँसू पोंछे और ढारस देकर कहा, "प्यारी! तुम किसके लिये विलाप कर रही हो? तुम्हारे बाप ने लोक और परलोक दोनों ही बना लिये। देखो! उन्होंने राज भी किया और अन्त में सच्चे ऋषियों की तरह हँसते खेलते हुये शरीर त्याग दिया। शोक तो उनके लिये करना चाहिये जिन्होंने अपने लोक और परलोक बिगाड़े हों।"

तब राजकुमार ने ऋषि का क्रिया कर्म किया और जहां उन राख गाढ़ी गई थी वहाँ एक बहुत बड़ा स्तम्भ बनवा दिया रानी के साथ वह रथ मर्दन नगर को लौट आया। अपने माँ बाप के पांव

पड़ा और उनका आशीर्वाद लेकर सुख से रहने लगा। रुक्मिणी से विवाह करने का विचार उसके हृदय से जाता रहा।

जब काबेरी के राजा रानी ने यह बातें सुनीं वह मन में दुखी हुये परन्तु करते क्या! चुप हो रहे। हाँ रुक्मिणी महा दुखी हुई। वह कनक रथ के साथ ब्याह करना चाहती थी। काम और क्रोध के वश में आया हुआ मनुष्य क्या नहीं करता! उसको धर्म अधर्म का विचार नहीं रहा। कई दिनों तक सोचने पर यह बात समझ में आई कि "जब तक राजकुमार का मन ऋषिदत्ता की ओर से न फिर जाये तब तक काम निकलने की कोई आशा नहीं है।" फिर उसने सुलसा नाम की एक महा धूर्त और दुष्टा स्त्री को बुलाया और समझा बुझाकर रथ मर्दन नगर की ओर भेजा।

यह किसी प्रकार राजमहल में नौकरी पा गई। रात के समय ऋषिदत्ता और उसकी सारी सहेलियों को कोई नशीली वस्तु पान में खिला दी। जब सब अचेत होकर सो रहीं उसने किसी के लड़के को मार डाला। उसका लुहू एक प्याले में भरकर ऋषिदत्ता के सिरहाने रख दिया। साथ ही उसी जगह कटा हुआ सर भी ले जाकर रक्खा और बेचारी के मुँह में भी रक्त लगा दिया। जब प्रातःकाल राजकुमार ने देखा उसके मन में घृणा उत्पन्न हुई। वह समय और तरह का था। लोग डाइन और बैताल पर विश्वास करते थे। उसने यह सोचकर कि कहीं यह ऋषि पुत्री डाइन तो नहीं है पूछा, "यह क्या बात है?" बेचारी ने हाथ बाँधकर कहा, "मैं जैनी हूँ। जैनी की लड़की हूं। तुमने मुझको जंगल में देखा है। मेरे बाप ने तुमको मेरा सब हाल सुना दिया है। मैं नहीं जानती यह किसका काम है और किस अभिप्राय से किया है! मैं तो एक चिउँटी तक को नहीं सताती! मनुष्य का मारना तो दूर रहा।"

कनकरथ को तसल्ली हो गई और उसके प्रेम को कुछ भी धक्का नहीं पहुंचा। सुलसा यह हाल देख और सुनकर घबराई। फिर कई

दिन तक बराबर ऐसा ही होता रहा। महल के लोग बहुत घबराये। नगर के कई मनुष्य राजा के यहां आकर दुहाई देने लगे कि उनके कई छोटे छोटे बच्चे मार डाले गये हैं। राजा बहुत ही चकित हुआ सुलसा ने अवसर पाकर राजा से कहा, 'यह रानी बच्चों का मांस खाती और उनका रक्त पीती हैं। इसी से आप की भी बदनामी हो रही है।"

आजकल ऐसी बातों पर विश्वास नहीं किया जाता परन्तु एक समय था जब इस पवित्र भूमि में ऐसे लोग भी थे। दूर क्यों जाते हो अब भी कभी मूर्ख स्त्रियाँ पुत्र और सन्तान के लिये क्या क्या नहीं करती हैं ?

राजा के कान खड़े हुये। सुलसा ने देखा कि उसका जादू चल गया। रात को उसने फिर वही दुष्कर्म किया। दिन निकलते ही राजा को बुला लाई। वह पहले ही से पुलिस और अपने कर्मचारियों पर झुझला रहा था। पता पाते ही वह स्वयं महल में चला आया। कनकरथ समझ गया कि आज कुशल नहीं है। राजा आते ही राजकुमार को बुरी तरह से डांटने लगा, "तू जानता है कि तेरी स्त्री राक्षसी है और फिर भी उसके साथ रहता है।" उसने कहा, "पिताजी ! संसार में ईर्षा और द्वेष से मनुष्य क्या नहीं करता ! जब यर्थात बात का पता न लगे किसी को बदनाम करना उचित नहीं है।" राजा ने एक नहीं सुनी। उसने ऋषिदत्ता के सर के बाल पकड़ लिये, "राक्षसी ! तूने मेरे कुल को कलंकित कर दिया। जा दूर हो।" बेचारी को घर से बाहर निकाल कर जल्लादों को हुक्म दिया इसका सर उतार लो ऐसा न हो कि और बच्चे इसके हाथ से मारे जायें।

ऋषिदत्ता रोती थी। कनकरथ ने समझाया 'प्यारी रोना है। मैं अब तक भी तुझको निर्दोष समझता हूँ परन्तु बेबश हूँ। के विरुख मैं कुछ नहीं कर सकता। क्या करूँ ! कुछ कह

नहीं बनता।"

हुकुम पाते ही जल्लाद बेचारी को पकड़ ले गये। पहले नगर की गलियों में घुमाया और फिर उस रोती हुई लड़की को जंगल में लाये। यहाँ वह मूर्छित हो गई। सन्ध्या का समय था। जल्लादों ने सोचा--"यह आप मर गई है। मरे हुये को क्या मारें। उसकी लाश यहाँ ही पड़ी रहने दो गीदड और भेड़िये खा जायेंगे।" वह तो यह सोच समझकर चले गये और राजा को उसके मार डालने की सूचना दी।

कनकरथ की दशा बुरी थी। उसने आत्म घात करना चाहा परन्तु राजा के हुक्म से उसके हाथ पाँव बांध दिये गये। वह कई कारागार में रहा। ऋषिदत्ता की मोहनी मूर्ति उसकी आँखों में समा गई थी। वह दिन रात खाट पर पड़ा रहता और ठन्डीं आहें भरता था।

(७)

जब ठंडी हवा बहने लगी, ऋषिदत्ता ने आखें खोलीं। अपनी दशा देखी। जल्लादों ने नील से उसका मुँह काला कर दिया था। उसके सर पर झाड़ बाँध दी थी और सारे शरीर पर नीम के पत्ते लपेट दिये ये। उसने इन सबको दूर किया और जान के डर से भाग निकली। वह रोती हुई कई दिनों पीछे भूखी प्यासी उसी जगह पहुंची जहां उसका बाप जलकर मरा था। वह स्तम्भ (खंभे) से लिपटकर रोने लगी, "पिताजी! आओ. देखो तुम्हरी लाड़ली बेटी की क्या दुर्गति है तुमने कभी अपने जीवन में मुझको एक भी बुरी बात नहीं कही थी परन्तु मैंने राजमहल में जाकर न केवल गालियाँ सुनी किन्तु मेरा हर तरह से अपमान किया गया। मैंने ऐसा क्या पाप किया था जिस दण्ड इस प्रकार मिला! मैं बराबर धर्म का पालन करती रही। कभी भूल कर भी किसी मनुष्य का हृदय नहीं दुखाया। मैं कैसे समझूँ कि मैं डाइन हूँ और मैंने बच्चों

का लहू पिया होगा ! परन्तु संसार ऐसा ही कह रहा है। आह ! मैंने राजमहल में जाना क्यों स्वीकार किया ! मैं निर्दोष हूं ! तुम कहाँ हो ? आओ और मेरी दशा अपनी आंखों से देखो।"

"माँ मेरे जन्म लेते ही मर गई। मैंने नहीं जाना कि मां का सुख कैसा होता है ! परन्तु बाप ने माँ की जगह ले ली। लाड़ और प्यार के साथ पाला ! इस प्यारी झील का पानी राजमहल के शरबत से कहीं मीठा और स्वादिष्ट था ! इस जंगल के कन्दमूल महल के मीठे पकवान से कहीं अच्छे थे ! यह फूँस का झोंपड़ा राजमहल से लाख गुना उत्तम था। बाप के प्यार करने वाले हाथ जब सर पर रक्खे जाते थे पति की गोद से कहीं शान्तिप्रद और सुखदाई थे। ऐ मेरे भाग्य ! तूने यह क्या खेल खिलाया ! माँ के साथ मुझको भी क्यों न मार दिया। यह दुर्दिन दिखलाने के लिये क्यों रक्खा ? पिताजी ! तुम्हारी लड़की अकेली जंगल में विलाप कर रही है। क्या तुमको दया नहीं आती ऐ मेरे बाप की आत्मा ! यदि मैं तेरी अंश हूँ तो क्यों तुझको मुझ पर दया नहीं आती ? मैंने क्या बुरा काम किया है जो दुख के अथाह सागर में इस प्रकार डूब रही हूं !"

मैं युवती हूँ ! अवला हूं ! अभी मुझे संसार का अनुभव नहीं है इस सुनसान जंगल में कैसे अकेली रहूंगी ? यह सच है यहां कोई नहीं आता। परन्तु यदि कोई आ गया तो मेरी क्या दशा होगी ? किस प्रकार किसी दुष्ट और पापी से अपने आपको बचा सकूँगी ! किसका दोष किसके सर पर मँढ़ा जाय ! विधाता तेरी विचित्र लीला है ! मनुष्य की बुद्धि उसे नहीं समझ सकती !"

"आह पिताजी ! तुमने चलते समय राजकुमार से कहा था, 'ऋषिदत्ता का हृदय महा कोमल है। एक कठोर वचन या थोड़े ही अपमान करने से मर जायगी।" क्या तुमने झूठ कहा था ? ऋषिदत्ता का हृदय इन्द्र के समान क्यों हो गया ? वह अब तक क्यों नहीं मरी ? परन्तु नहीं तुम झूठे नहीं हो राजकुमार ने ऋषिदत्ता का

अपमान या निरादर नहीं किया। न उसने कोई कठोर बचन कहे। वह अब भी उसे सच्चे हृदय से प्यार करता है। और यही कारण है कि अब तक वह जीवित है। प्रेम में बड़ी शक्ति है। यह मैं भली भाँति जानती हूं।"

"प्यारे पिताजी! आओ, अपनी भोली भाली और दुखिया लड़की को ढारस दो! मैं कहाँ जाऊँ? क्या करूँ?"

इस प्रकार रोती हुई ऋषिदत्ता देर तक उस पत्थर के खम्भे से लिपटी रही। घंटों रोने से सुस्ती आ गई। चित कुछ कुछ शान्त होने लगा। सोचा समझा, विचारा और झील में नहाकर काले रंग को धो डाला। ऋषभ देव की मूर्ति के पास जाकर सर झुकाया, "जिनेश्वर! आदि तीर्थङ्कर! इस अवला पर दया करो। बाप की आत्मा ने ढारस नहीं दी। मां बाप जन्म के साथी हैं कर्म के साथी नहीं हैं। तुम दया के समुद्र हो! जीवों को भव सागर से पार लगाने आये थे। मेरे इस दुख में काम आओ। तुम मुझको न भूलो और मैं भी तुमको न भूलूँगी।"

कान में शब्द आया 'धीर्य्य धर मर्दाने कपड़े पहिन ले जिस जड़ी के रंग से तेरा बाप पहिले तुझको अजनवी पुरुषों के भय से रंगा करता था उसी से तू अपने शरीर को नित्य रँग लिया कर। तू ऋषि पुत्री है। कन्दमूल जंगल में बहुतायत से हैं। झील का पानी कम न होगा। तपस्या कर तू ही दुखिया नहीं है। दुख बुरे भले सब पर आता है। महावीर स्वामी जैसे तपस्वी तीर्थङ्कर के कानों में दुष्टों और मूर्खों ने खूँटे ठोंके थे। तू उसी महावीर की आत्मिक पुत्री है। वही तेरा सच्चा बाप है। उसका ध्यान बराबर तेरे साथ रहकर सँभाल करता रहेगा। झोंपड़े के एक कौने में अब तक तेरे बाप की धर्म पुस्तकें पड़ी हुई हैं। उनका नित्य पाठ किया कर। पूजा बन्दना और तप का ध्यान रहे। समय आयेगा जब तेरे भाग्य उदय होंगे। सब तुझको निर्दोष कहकर प्यार करेंगे। रोना चिल्लाना

बन्द कर। इससे कोई लाभ नहीं है ऋषि पुत्री को ऋषि के समान रहना चाहिये।" आंसू की धार बन्द हो गई। उसने सोचा "क्या यह शब्द मेरे ही हृदय से निकले हैं! क्या आश्चर्य जिनेश्वरों की प्रेरणा से ऐसा हो।" दुख की मारी हुई ऋषिदत्ता ने अपने आपको वैसा ही बना लिया।

(८)

रुक्मिणी को अब आशा की झलकती हुई मूर्ति दिखलाई देने लगी। राजा रानी की जान में जान आई। पुरोहित फिर पहुंचा। हेमरथ ने बेटे को बुला भेजा, "पुत्र! तू कब तक मरी हुई डाइन के लिये दुखी रहेगा? जो होने को था हो गया! होने वाली बात होकर रहती है। क्षत्री का धर्म कठिन है। औरों को अपना ही दुख होता है। क्षत्री दूसरों के दुख से दुखी रहता है। तेरा धर्म है कि प्रजा का पालन करे। तू फूल था। अब सूखकर काँटा हो गया है। तुझसे राजमहल की शोभा थी। तेरे सुख की कान्ति और चमक दमक जाती रही। यदि फूल है तो खिलकर अपने सुगन्ध को चारों ओर फैला और यदि दीपक है तो चमक चमक कर सबको प्रकाश दे। तू मेरी आँखों का तारा है। देख तेरे दुखी रहने से मेरी और तेरी माता की क्या दशा होगई! अपने लड़के को कोई दुखी नहीं देखना चाहता। दशरथ ने पुत्र के शोक में प्राण त्याग दिये! क्या तू मुझ को दूसरा दशरथ बनाना चाहता है? छी! छी!! बेटे! यह तू क्या कर रहा है! अपने धर्म को देख। जा कावेरी का पुरोहित तुझको बुलाने आया है। रुक्मिणी के साथ ब्याह करके सुखी रह मेरे पीछे राजगद्दी पर बैठकर न्याय के साथ प्रजा का पालन कर। यह मेरा हुक्म है। यही मेरी इच्छा है। मां बाप की आज्ञा न मानना अधर्म है। माँ बाप को प्रसन्न रख और तू भी संसार में सुखी रहेगा।"

क्रमशः

सम्पादकीय

गुरु शरण गच्छामी

बन्दहूँ गुरुपद पदुम परागा, सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन, नयन अमिय दृग दोष विभंजन।

संसार में हर मनुष्य मन में यह कामना करके पूजा करते हैं कि हम परमेश्वर के निकट पहुंच जांय। हमारे दुख कट जाँय। संसार की समस्त उपलब्धियां प्राप्त हो जांय। मगर कर्म के प्रारब्ध को कोई नहीं मिटा सकता है। जैसा हमने वोया है वैसा ही काटना पड़ेगा। भला कर्म किया है तो आपकी समृद्धि अवश्य है। कर्म ही हमारे जीवन का मुख्य अंग है। कर्म भी हमारी भावनाओं के आधार पर किया जाता है भावनायें हमारे विचारों पर निर्भर होती है। विचार हमारे निकट के वातावरण, सामाजिक बन्धनों तथा जैसा अन्न हम खाते हैं वैसा ही हमारा मन हो जाता है जहां से विचारों की श्रंखला प्रारम्भ होती है? मन हमारा अगर अशुद्ध है संसारिक वातावरण अगर सन्तोष जनक नहीं हैं तो हमारे अन्दर शान्ती आ ही नहीं सकती है और इस प्रकार हर मनुष्य किसी न किसी प्रकार से मानसिक अशान्ति से घिरा रहता है तो फिर इससे छुटकारा पाने का साधन क्या है। इसका एकमात्र साधन है किसी र्ण पुरुष, सत पुरुष का संतसंग। वह कहां मिलता है कैसे मिलता ह सब निर्भर है हमारे संस्कारों व आकाक्षाओं पर।

गुरु के निकट आने से, उनकी कृपा से हमारे कल्याण में तनिक भी देर नहीं लगती है मनुष्य जितना ही निकट गुरू के जायेगा,

गुरु की कृपा से असम्भव भी संभव हो जाता है। वह चाहें तो एक क्षण में वह सब कुछ दे सकते हैं। मगर इसके लिये चाहिये अटूट बिश्वास।

जितनी हमारे विश्वास में कमी होगी उतनी ही कमी हमारे कल्याण में होगी। हमारा साधन अपूर्ण हो सकता है मगर हमारा विश्वास कभी भी अपूर्ण न हों तो हमारा कल्याण निश्चित है। गुरु में हमारा पूर्ण श्रद्धा व विश्वास हो तो हम जीवन में दुखी रह ही नहीं सकते। गुरु तो स्वयं पूर्ण हैं कमी तो केवल शिष्य ही में होती है। उसी कमी को गुरु अपनी कृपा से पूरा करते हैं।

गुरु वह महान शक्ति है जो हर समय हमारे साथ रहती है केवल हमारे अज्ञान के कारण हम उसको समझते नहीं हैं वह इसी प्रकार है जैसा कि आपके कमरे में रेडियो तो रखा है मगर उसको शक्ति से जोड़ा नहीं है विजली का श्विच लगाना नहीं जानते तो आप उसकी आवाज सुन ही नहीं सकते। इसी प्रकार गुरु हमारे ही घट में मौजूद है केवल अपनी सुरत को उससे जोड़ा नहीं है। इस अज्ञान के कारण हम इस संसार के दुखों से घिरे रहते हैं। एक दफा आपको उस शक्ति से मिलने का रास्ता पता लग जाय तो फिर देखिये जीवन का आनन्द।

यह आनन्द भी उन्हीं को मिलता है जिनको आन्तरिक सुख की अभिलाषा है न कि संसारिक क्षणिक सुखों की।

———

महर्षि शिवव्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

सम्पूर्ण महारामायण	१०)
श्री मद्भगवद्गीता भाग १	१)५०
,, भाग २	१)५०
नानक योग ३ भाग	४)
राधास्वामी योग ६ भाग	८)
कबीर योग प्रथम भाग	२)५०
,, द्वितीय भाग	२)७५
,, तृतीय भाग	१)७५
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	३)
शरणागति योग	)७५
उपासना योग	१)
कर्म रहस्य	१)
आनन्द योग प्रकाश	२)५०
Light on Anand yog	३)
पंथ संदेश	३)
सहज भक्ति	१)
आत्मिक प्रायमर	१)
दयाल योग (उर्दू)	२)५०

उच्चकोटि के उपन्यास

शाही भूत	१)५०
शाही डाकू	३)७५
शाही लकड़हारा सजिल्द	४)६२
शाही भिखारी	३)५०
शाही जादूगरनी	२)५०
आबदार मोती	२)५०
ताबदार मोती	२,५०
झलकदार मोती	३)
गिरहदार मोती	१)२५
रंगदार मोती	२)५०
दलदार मोती	३)७५
कजदार मोती	३)
चमकदार मोती	२)५०
हिसक मोती	२)५०
ओ३म नाविल	३)
शाही भक्तिनी	२)५०
शिवजी की अद्भुत कहानी	१)५०
सिंध देश की कहानियाँ	१)२५

पाठ तथा गाने के शब्द

शिव शब्द सागर सजिल्द भाग १ व २	७) ७)
फकीर भजनावली	१)५०
शब्द गुंजार भाग १, २, ३,	५)
शब्दों का गुटका	)६०
नन्दू भाई की साखी	१)५०
पिंगल साखी	१)
सन्त कबीर की साखी	३)
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१)५०
कबीर शब्दावली	२)२५
नैय्यरे आजम	१)५०
रहिमन नीति दोहावली	)७५
सन्त शब्दावली	१)५०

Regd No L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 1748

श्री Sri Sinde Vithal Arjun Rao

At. Po. KARADKHED

Dist - Nanded 431718

सम्पादक — परमदयाल मीतल

व्यवस्थापक व प्रकाशक—

श्रीमती सुधा मीतल,

शिव भवन, लेखराजनगर

अलीगढ़

Printed by S. Mittal, Data Dayal P...